Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वितस्ता का तीसरा किनारा

महाराज कृष्ण सन्तोषी

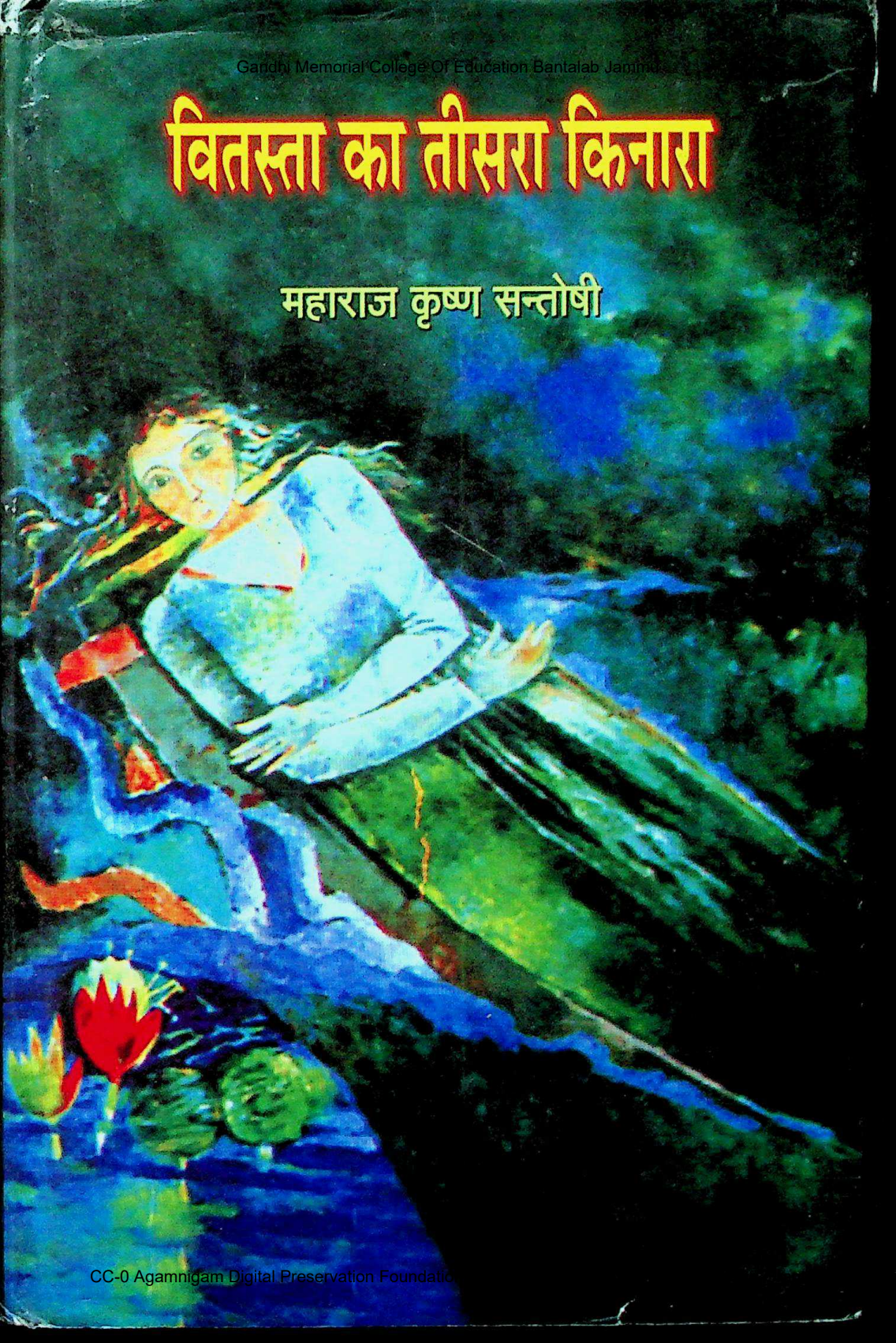

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कश्मीर के सुपरिचित हिन्दी कवि श्री महाराज कृष्ण संतोषी का यह कविता-संग्रह विस्थापन के दर्द, संताप और संघर्ष की मार्मिक गाथा है। सम्भवतः पहली बार हिन्दी कविता में विस्थापन और शरणार्थी जीवन की त्रासदी महाराज कृष्ण संतोषी और अग्निशेखर सरीखे कवियों में इतनी व्यग्रता और विश्वसनीयता के साथ व्यक्त हुई है। और यह त्रासदी सम्पूर्ण भारतीय जीवन या कहें सम्पूर्ण मानवता की त्रासदी का सारांश बनकर संतोषी की इन कविताओं में उपस्थित है। 'जलावतनी का गीत' अपनी करुणा और दृढ़ता में सहसा फ़ैज़ और महमूद दरवेश की याद दिला जाता है।

घर की खोज आरम्भ से ही विश्व-कविता का एक केन्द्रीय रूपक रहा है। जब संतोषी कहते हैं—'कैसे रहूँ उस घर में जहाँ मतैं दिया जलाने से भी डरता हूँ'—तो एकबारगी वह आज के सम्पूर्ण भारतीय जीवन की असुरक्षा और उजड़ने की विवशता को भी वाणी दे रहे होते हैं। इसके साथ ही एक तल्ख़ स्वर उभरता है—

"उन्होंने हत्याएँ कीं/ पर हत्यारे नहीं कहाए/ कभी-कभी इतिहास/ हत्यारों का कितना मान बढ़ा देता है?"

इसीलिए संतोषी की कविता को समझने के लिए, उसके समुचित मूल्यांकन के लिए सम्पूर्ण भारतीय इतिहास और वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखना जरूरी है। संतोषी की कविता आपको पीड़ितों का पक्ष लेने को बाध्य कर देती है।

- शेष फ्लैप 2 पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वितस्ता का तीसरा किनारा

महाराज कृष्ण संतोषी

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 527
Dated 8-9-09

अनामिका प्रकाशन
52, तुलारामबाग, इलाहाबाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Professor of Hindi

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISBN : 81-87770-23-6

प्रकाशक : अनामिका प्रकाशन
52, तुलारामबाग, इलाहाबाद-211003

प्रथम संस्करण : 2005

© : लेखक

आवरण : भूषण कौल

अक्षर संयोजन : मानस कम्प्यूटर्स, इलाहाबाद

मुद्रक : प्रभात प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद

मूल्य : रु. 150.00

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वर्गीय पिता
पंडित अर्जुन नाथ खार
की स्मृति को समर्पित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिलसिला

❐

प्रार्थना : 11
कुफ्र : 12
झूठ : 14
चुप्पी : 15
अयोध्या : 16
धर्म के खिलाफ... : 17
मुझे ऐसा एक घर... : 18
मैं क्या था : 19
दरिद्रता के खिलाफ : 20
बिल्लियाँ : 21
कला समीक्षक : 23
पिता के लिए : 24
कला का अंतिम क्षण : 25
हे चिनार! : 26
उजले कपड़ों का गीत : 27
जीवन एक अधूरी... : 28
अकेलापन-1 : 29
अकेलापन-2 : 30
संवाद : 31
किनारे किनारे : 32
प्रश्न : 33
लेह में सिन्धु नदी... : 34
आवारा नाव : 35
काग संवाद : 36
बच्चे माँ-बाप के... : 38
सांकल : 40
मृतक : 41
हरिद्वार : 42
फर्क : 44
अगली हत्या का डर : 45
दंगे : 46
आकाश से बादलों... : 48
कंगाल : 50
लोकतंत्र में पतंग : 51
कमल : 52
कोई मुझसे न छीने : 53
धन्यवाद : 54
भाषा : 55
घर स्त्री की कविता है : 56
सपने में साइकिल : 57
दरारें : 59
वही आवाज़ : 60
कविता और गणित : 61
एक पहाड़ी यात्रा... : 62
रंग : 64
बारिश के नाम चिट्ठी : 65
एक पुराना माऊथ... : 66
संग्रहालय : 67
गणतंत्र दिवस की... : 69
गोरखा : 71
एक अंग्रेज़ी फिल्म... : 72
प्रायश्चित : 74
पृथ्वी मेरा घर : 75
कराकुल्ली : 76

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नियति : 77
उम्र का कागज़ : 78
जाड़े में एक प्रेम... : 79
वे दिन कितने... : 81
मैं तोते के बारे में... : 83
मैंने देखी है : 85
हम में से ही कोई : 86
स्वीकारोक्तियाँ : 87
हम : 89
नीलनाग का दुःस्वपन : 90
डर ने हमें बनाया... : 94
जीवितों का संग्रहालय : 95
वहाँ सब यह कहते हैं : 97
डर : 98
जलावतनी का गीत : 99
एक बार गाँव लौट... : 101
हम वहाँ हैं : 103
बहुत दिनों बाद : 104
शांति प्रक्रिया : 105
वितस्ता बहती है... : 107
सेब के बारे में एक... : 108
फिरन : 109
बंदूक की नोंक पर... : 111
ऐसा क्यों होता है : 112
हम वे लोग है : 114
संग्रामपुरा हत्याकाण्ड : 116
यही तो दिक्कत है : 117
विस्थापित शिविर में... : 118
इतिहास का निर्णय : 122
वितस्ता का तीसरा... : 124

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वितस्ता का तीसरा किनारा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रार्थना

घर था
प्रार्थना की तरह पावन

घर जला
प्रार्थना के ही कारण।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुफ़्र

मुझे लगता है
जब कहीं कोई मंदिर बन जाता है
धरती पर
एक नया स्कूल खुल जाने की संभावना
मर जाती है

मुझे लगता है
जब कहीं कोई मसजिद घेरने लगती है
बहुत सारी जगह
कई ज़रूरतमंद लोगों के घर बनने से
रह जाते हैं

ओ ईश्वर
कहीं ऐसा न हो
तुम्हारी ही पृथ्वी पर
तुम्हारे ही कारण
बूढ़ों की सैर करने की जगह घट जाए
बच्चों के लिए
खेल के मैदान तंग पड़ जाए
प्रेम करने वाले
कहीं बात करना चाहें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो पंडित मुल्लाओं के भय से
प्रेम करना ही भूल जाएँ

बता ईश्वर! बता खुदा!
तुम्हें अपने लिए
और कितनी जगह चाहिए?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झूठ

अपने ईश्वर के विषय में
हम फैलाते है झूठ तरह-तरह के

उस झूठ से बढ़ जाती है प्रतिष्ठा
हमारे ईश्वर की

ईश्वर से बड़ा है हमारा झूठ
जो हमें बचा लेता है
जब हम सच से डरने लगते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चुप्पी

जब देवता हमारे पास थे
तब हमें भरोसा था
वे हमारे साथ हैं

अब जब देवता
न हमारे पास हैं
न हमारे साथ

हमने बनाई उनकी अनुकृतियाँ
और विस्थापित बस्तियों में
प्रतिष्ठित किया

अब देवता हमारे पास भी हैं
हमारे साथ भी
पर अब वे बोलते नहीं हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अयोध्या

वह मेरा ही सच था
रामचरितमानस में जो तुमने कहा
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ

वही अवधपुरी
अब मुझे भयभीत करने लगी है

आओ तुलसी
मैं और तुम
रामायण की कथा बदल दें

चौदह वर्ष के वनवास को
आजीवन वनवास बना दें
फिर लिख देना तुम
राम
अब अयोध्या कभी नहीं लौटेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धर्म के खिलाफ प्रार्थना

यह जीवन
जो मुझे पहले चकित करता था
अब भ्रमित करने लगा है

इस उम्र में
मुझे अब न जाना पड़े धर्म की शरण
प्रार्थना कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे ऐसा एक घर चाहिए

बरसों बाद
एक अच्छा सपना देखा
देखा सपने में एक बड़ा घर
अनगिनत खिड़कियों वाला

इस घर की
जितनी खिड़कियाँ थीं
उतने ही चाँद थे
और थे उतने ही आसमान नक्षत्रों भरे

मैं कुछ देर इस घर में रहा
और पुकारता रहा
मुझे ऐसा ही एक घर चाहिए
जो मेरी दृष्टि को विस्तार दे

बरसों बाद
एक अच्छा सपना देख कर लगा
इतिहास उनका है
जिनके सपने बड़े होते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं क्या था

मैं क्या था
जल की पतली-सी धार के सिवा
पर एक मछली की प्यास ने
मुझे दरिया बना दिया

वही मछली अब मुझे रोकना चाहती है
पर मेरी अपनी प्यास
मुझे बहा ले जा रही है
समंदर की ओर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दरिद्रता के खिलाफ

दरिद्रता के खिलाफ है
मेरी यात्रा
इसलिए मैं पहले कुबेर बनूँगा
बाद में बुद्ध

कुबेर इच्छा है
जाने कहाँ कहाँ ले जाएगी
पाप की किन तलहटियों तक
पर मुझे विश्वास है
मुझसे दूर नहीं है बुद्ध भी

एक दिन जब सामने
बुद्ध होंगे
अनत होगा मेरा शीश
हाथों में नहीं होगा पुष्प भी
न ही होठों पर प्रार्थना

मैं कहूँगा बुद्ध से
ये लो मेरे पाप
इन्हें मैंने अर्जित किया है
तुम तक पहुँचने के लिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिल्लियाँ

मेरे दोस्त का यह कहना है
बिल्लियाँ बड़ी मनहूस होती हैं

उसका यह कहना था
कि मुझे बिल्लियों में
मनहूस लोगों की शक्लें दिखायी देती हैं

बिल्लियाँ हमारे दुख में
हमारा साथ नहीं देतीं
वे हमारे सुख में भी खुश नहीं होतीं

उन्हें दिखते रहें
चारों तरफ चूहे
और दूध भरी कटोरियाँ
यही इनकी विचारधारा है

अचानक पालने में सोया बच्चा
चीख़ उठता है
अभी अभी कोई बिल्ली
उसकी आँखों में डाल गई है
अपनी छाया

इतिहास के पन्नों को फलाँगता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाहर निकल आता है नेपोलियन
और रौबीली आवाज़ में कहने लगता है–
अरे लोगों!
बिल्लियों से बचा लेना अपने बच्चों को

बिल्लियों की ही वजह से तो
मैं हार गया युद्ध
जीवन का युद्ध।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कला समीक्षक

हरी सब्ज़ घास
और हमारे होने की
परवाह किए बिना
वह जो अभी-अभी थूक गया उस फूल पर
शहर का कला समीक्षक था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिता के लिए

मृत्यु
दीवार के पीछे खड़ी थी
और इतने वर्षों से सुन रही थी
पिता के हुक्के की गुड़गुड़

पिता जीवन भर माँगते रहे आग
कभी-कभी
वह अपनी चिलम के लिए
आकाश से तारे तक माँग लेते

हुक्के के घुटने में
काँपते जल और सिर में
जागते अंगारों के बीच
पिता जिए एक जीवन भरपूर

अब जब नहीं रहे पिता
लगता है
वह यहीं कहीं हैं
और हुक्का गुड़गुड़ाने के लिए
कोई गुप्त जगह चुन ली है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कला का अंतिम क्षण

चित्र जिन पर टँगे थे
वे दीवारें सरकार की थीं
रंग और रेखाएँ प्रतीक्षा कर रही थी कि उन्हें
देखने खुद आएँगे मुख्यमंत्री

वे आए, सिंह की संतान
चित्रों को डूबते हुए देखते रहे
मुझे लगा कि वे ढूँढ़ रहे हैं इन चित्रों में
उस हिरण। को जो उसे राजा होने का स्वाद देती है

कलाकार खुश था राजा से हाथ मिलाकर
सुबह वह दिखेगा शहर की खबरों के बीच
और उसकी अलबम में एक फोटो और जुड़ जाएगा

प्रदर्शनी से बाहर निकलते हुए पूछा हिन्दी कवि
मनोज शर्मा ने एक कमांडो से
सच बताना, क्या तुम कभी नहीं हँसते?
मैं उस वक्त घर जाने की जल्दी में था कहना भूल गया
कि जो बंदूक के ट्रिगर पर ही ऊँगली रखते हैं, वे कब हँस सकते हैं।

घर लौटते हुए कहा मैंने मनोज से
दोस्त! क्या कला का यही अंतिम क्षण होता है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हे चिनार!

हे चिनार!
मेरे ध्यान में आ
कि मैंने बंद कर दी है ईश्वर की किताब

मैं कब तक दोहराता रहता
वही-वही शब्द
जिन्होंने मुझे बना दिया
किसी धर्म का अनुयायी मात्र!

मुझे यह क्या हुआ है
शोर को प्रार्थना
भिक्षावृत्ति को भक्ति मानने लगा हूँ

पोथी पढ़-पढ़ कर
शब्दों ने मुझमें अहंकार भर दिया है

हे चिनार!
मेरे ध्यान में आ
कि मैं तुम जैसा होना चाहता हूँ
विचार से नहीं
स्वभाव से धार्मिक बनना चाहता हूँ
जैसे तुम्हारी छाया।

CC-0 Agamm Gandhi Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उजले कपड़ों का गीत

मैं जो रोज़ उजले कपड़े पहनता हूँ
वह मेरा साहस है

उज्ज्वलता में मेरा वैसा ही विश्वास है
जैसे किसी सिपाही को अपने हथियार में

खाली खाली जेबों के सन्नाटे
और घबराए हुए से मन की उदासी के बीच
मैं जो रोज़ उजले कपड़े पहनता हूँ
वह मेरे बाजुओं की ताकत है
जो निचोड़ सकते हैं कितना भी मैल

मैल जीवन की हताशा है
उसे निचोड़ते रहें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवन एक अधूरी रफ कापी

जीवन एक अधूरी रफ कापी
जो किया
सही गलत सब साथ साथ

जिस तरह किया
उसे क्या छिपाना
जब सामने बैठा हो काल

जीवन एक अधूरी रफ कापी
जिसके सब पन्ने
धागे से निकले हुए
फड़फड़ाते रहते हवा में
कुछ उड़ जाते
कुछ बिक जाते रद्दी में
कुछ काग़ज़ की नाव बन कर
बारिश में बह जाते

जीवन एक अधूरी रफ कापी
जिस पर जो लिखा सब अमिट
जहाँ कोई भी रबर
हस्तक्षेप नहीं कर सकता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अकेलापन-1

जब आदमी हो निपट अकेला
तो बहुत ज़रूरी है समय समय पर उसका खाँसना

वैसे कितना ही अच्छा होता
यदि खाँसने की अपेक्षा
वह अधूरे गीतों के मुखड़े ही गा लेता

और यदि वह न खाँसना चाहता है, न गीत गाना
फिर बेहद ज़रूरी है
उसके घर से
कुछ टूटने की ध्वनियाँ ही निकल आएँ बाहर...

कैसी विडम्बना है
सरोकारों के नाम पर
समाज की चिन्ता
और नगरपालिका का दायित्व
बस इतना-सा रह गया है
कि सड़ांध न फैले।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अकेलापन-2

जीवन की पहली चीख से
मृत्यु की अंतिम हिचकी तक
फैला यह अकेलापन
जब हमें बहुत डराने लगता है
तब हम खुद से ही
कितने दूर निकल आते हैं
और थाम लेते हैं
कोई विचार
कोई प्रतीक
कोई नाम
फिर कभी वापस
अपने तक लौट नहीं पाते

यही तो है जीवन की त्रासदी
कि सारी उम्र
हम लाँघ नहीं पाते
अपने आप तक का
थोड़ा-सा भी फासला।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संवाद

काठ का घोड़ा
और लोहे का शेर
दोनों थे पास पास

यदि वे दोनों
एक-दूसरे से कुछ बोल पाते
तो शेर यूँ कहता—
अरे काठ के घोड़े
घुस आया है तेरे भीतर कठफोड़वा
खबरदार!

तब घोड़ा भी उसे यह कहता
सुन हे वनराज—
ज़ंग लगी है
तुम्हारे लोहे की मूँछ पर
होशियार!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किनारे किनारे

दु:ख नहीं है
कि हम सुखी नहीं है

दु:ख नहीं है
कि हम सुखी नहीं होंगे

दु:ख है
कि जीवन भर
किनारे-किनारे चलते रहे हम।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न

वह जिसने बनाया दरवाज़ा
डरपोक था

जिसने किया ईजाद ताला
सिपाही था

जिसने रखी चाभी अपने पास
शासक था

चोर बनाने में
बोलो
कौन अधिक उत्तरदायी है
डरपोक
सिपाही
या शासक?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेह में सिन्धु नदी देख कर

(इकबाल खांडे के लिए)

हवा गवाह है
नदियाँ हमसे कुछ कहना चाहती हैं।

वे हमें उपदेश नहीं देना चाहतीं
नहीं कहना चाहतीं
व्रत उपवास रखो
या पढ़ो कोई धर्म ग्रन्थ

वे हमसे कहना चाहती हैं
इस पृथ्वी पर
हमें स्वीकार है परस्पर घुल-मिल जाना
और मित्रता का निमंत्रण लेकर
दुश्मन सरहदों के बीच से भी
फूल खिलाते हुए बह जाना

अपने कलकल स्वरों में
संसार की समस्त नदियाँ यही कहती रहती हैं
हमें सुनो...

पर यह कैसी त्रासदी है
इतिहास हर बार अनसुना कर देता है
नदियों का कहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आवारा नाव

हमने बुनी रस्सी
फिर उस रस्सी से पूछा
नदी में आवारा डोलती हमारी नाव को
तट से बाँध सकोगी?

हवा ने
सूँघी हमारी बात
वह नाव को और दूर ले गई।

पर हम बुनते ही रहे रस्सी
क्या पता
अब और कितनी दूर से
हमें खींच लानी होगी तट पर
वापस
अपनी नाव।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काग सम्वाद

कश्मीर में माघ पूर्णिमा को काग पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। काग का जन्मदिन मनाने की यह प्रथा अभूतपूव है। इसी पर्व को समर्पित यह कविता।

काग!
तुम नहीं आए कल
नहीं पिया जल
खाया अन्न
पूरा दिन
सूना सूना रहा हमारा आंगन

कहाँ उड़ गए थे

हमने पूछा
आंगन के सारे फूलों से
काग क्यों नहीं आए कई दिनों से

बोले फूल
उनका क्या भरोसा
कहीं उन्हें मिला होगा
कोई टुकड़ा मांस
और वहीं रह लिए होंगे आसपास

पर हमें नहीं हुआ भरोसा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम करते गए प्रतीक्षा
रखते गए काग पट्टी पर
अन्न और जल

आएँगे कभी वापस
तो उनसे ज़रूर पूछेंगे

क्या शुद्ध अन्न से ऊब गए हो
क्या स्वच्छ जल तुम्हें भाता नहीं

पर नहीं आए काग फिर कभी
और हम भी भूलते गए रखना आहिस्ता आहिस्ता
अन्न जल में से उनका हिस्सा

पर मेरे सपने में
जब से आया वह बूढ़ा काग
मेरी आत्मा सिहर उठी है
अब बार बार यही दोहराता रहता हूँ

कैसे आएँगे वहाँ काग
पियेंगे जल
खाएँगे अन्न
जहाँ हमने पाल रखी हों—
काली बिल्लियाँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बच्चे माँ-बाप के कंगाल दिनों से बहुत डरते हैं

बच्चे कहते हैं अब यह साइकिल पुरानी हो गई है
समय की तेज़ गति का सामना करने में बिल्कुल असमर्थ
मुझे लगता है वे साइकिल के साथ-साथ मेरे बारे में भी
कह रहे होते हैं

बच्चे की अनुपस्थिति में साइकिल के पास जाकर
मैं उसका सारा लोहा प्यार से छू लेता हूँ
और उदास मन उसे यह कहता हूँ
अब तुम्हें मेरे घर से विदा लेनी पड़ेगी
मुझे लगता है कोई उस समय मुझसे भी कह रहा होता है

बच्चे यह सोच कर साइकिल को बाहर खुले में ले आएँ हैं
कि प्रखर धूप और तेज़ बारिशों में बिना छत बाहर रहेगी
तो लोहे का सारा घमंड निकल जाएगा
मुझे लगता है बच्चे मेरा भी घमंड तोड़ना चाहते हैं

खिड़की के निकट दीवार के सहारे छोड़ गए हैं
बच्चे मेरी साइकिल
कभी-कभी अपने नन्हें पहियों से थोड़ा ऊपर उठकर
साइकिल मेरे कमरे में झाँकने लगती है
और मैं भी गर्व से उसकी तरफ देखता रहता हूँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस समय मैं अपने बच्चों से कहना चाहता हूँ
यह साइकिल मेरे संघर्ष की गवाह है पर डरता हूँ कहीं वे
इसी कारण बेच न दें इसे किसी कबाड़ी को

दरअसल बच्चे माँ-बाप के कंगाल दिनों से बहुत डरते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साँकल

मृत्यु
एक बड़ा दरवाज़ा

जीवन है
केवल छोटी-सी साँकल।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मृतक

जीवित उदास है और मृतक प्रसन्न

मृतक प्रसन्न है कि अब उन्हें
न भाषा की आवश्यकता है न विचार की
और न कोई जोखिम ही उठाना पड़ेगा

मृतक प्रसन्न है कि अब उन्हें
रोशनी की भी आवश्यकता न रही

केवल एक बात को लेकर उदास है मृतक
कि जीवित उनसे ईर्ष्या क्यों नहीं करते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हरिद्वार

मृत्यु
जीवन है इस नगर का
पर विचित्र है
जो मरते है वे दूसरे ही होते हैं
कोई स्वयं के लिए
क्यों नहीं मरता इस नगर में

मुर्दों का स्वागत करता हुआ यह नगर
सुबह से शाम तक
मंत्रों का व्यापार करता है

पुलिस हो या पंडा
साधु हो या नाई
फोटोग्राफर अथवा भिखारी
कोई भी हो
यह नगर मुर्दों की दया पर टिका हुआ है

उत्सव की
यहाँ कोई कमी नहीं है
स्वर्ग से मिला हुआ है यह नगर
और सुख है मरना यहाँ
कोई पाप करके मरे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

या पुण्य साथ लिए
कुछ अंतर नहीं पड़ता
जब तक
मुर्दों के नाम पर
खर्च होता रहेगा
इस नगर में पैसा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फर्क

आदि मानव ने आग जलाई
और बस्तियाँ आबाद हो गईं

सभ्य मानव ने आग लगाई
और बस्तियाँ राख हो गईं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अगली हत्या का डर

जीना है हमें पिछली हत्या भूल कर
पर अगली हत्या याद रखते हुए

यह मानते हुए कि
अगली हत्या का समय
अभी तय नहीं कर पा रहे हैं हत्यारे

आवो घड़ी की टिकटिक
और कलेण्डर की फड़फड़ाहट के बीच
मृत्यु को भूलते हुए जीने की कोशिश करें

सम्भव है हमारे जीने के मनोबल से
डर जाएँ हत्यारे
और अगली हत्या हो ही नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दंगे

1

इतने सारे शव बनेंगे गवाह
किनके हक में किनके खिलाफ
इससे हमें क्या

हम इतिहासकार नहीं
प्रेस फोटोग्राफर हैं।

2

उनकी स्मृतियों के आसपास
जब-जब धूल की आँधी उठेगी
माँ के आँचल लहराएँगे
फिर कुछ देर आँखें बरसेंगी
और पत्थर में छेद हो जाएँगे।

3

ये शव नहीं
उनके लिए सीढ़ियाँ हैं
जब तक ज़िन्दा थे
डर था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनकी साँस साँस से

अब इतिहास के नमूने हैं।

4

कभी कभी
कब्रिस्तान का सन्नाटा
और मरघट से उठता धुवाँ
एक-दूसरे से पूछते हैं
जो मरते हैं
उनके लिए
कोई क्यों नहीं कहता
इंसान मरा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकाश से बादलों ने शहर को देखा

आकाश से बादलों ने शहर को देखा
उन्हें सिर्फ एक लहराता हुआ बाज़ार
दिखाई दिया
बाज़ार के बीच ही
उन्हें दिखाए दिए
उछलती हुई मुद्राओं के कोलाहल में
घर मंदिर स्कूल और कलाभवन
यहाँ तक कि व्यापार करते मरघट भी

बादल थोड़ा और झुके
उन्हें लोग बहुत छोटे दिखाई दिए
जो अपने कद से भी छोटी जगह में रहते हुए
एक-दूसरे की आत्मा कुतर रहे होते हैं

बादल इस शहर की खिड़कियों से
बेहद नाराज़ हुए
जो आकाश देखने के लिए नहीं
कचरा फेंकने के लिए खुलती हैं

बादलों ने
अपनी नन्हीं बूँदों के साथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शहर से दूर
पत्थरों से टकरा कर आत्महत्या की

तब से इस शहर में सूखा है
जो बाहर कम और भीतर ज्यादा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कंगाल

कुछ आँसू हैं
और
एक कागज़ की नाव

मैं अभी
कंगाल नहीं हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोकतंत्र में पतंग

जिसने कहा
कटी पतंग
कवि हुआ

जिसने कहा
काटी पतंग
मंत्री बना

जिसने यहाँ
लूटी पतंग
अफसर बना

जिसने यहाँ
चाही पतंग
वोटर बना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कमल

मैं नहीं होना चाहता था
किसी ध्वज का प्रतीक।

ईश्वर का प्रिय फूल होने में ही
अपार सुख निहित था मेरा
अब मैं वह फूल हूँ
जो मतदाताओं के मुहर की
प्रतीक्षा करता है

हे ईश्वर!
अब तुम अपने लिए
कोई और फूल चुन लो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई मुझसे न छीने

मैं जब बहुत थक जाता हूँ
किसी बड़ी नदी के बारे में सोचने लगता हूँ

होता हूँ उदास तो आँखों में
अनगिनत फूलों की छवियाँ लाता हूँ
और जब निराशा
मुझसे छीनने लगती है जीवन की चाह
मैं किसी ऊँचे पहाड़ का ध्यान करता हूँ

कोई मुझसे न छीने
मेरी नदियाँ
मेरे फूल
मेरे पहाड़!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धन्यवाद

हमें आभार मानना चाहिए
मुर्दों का

वे न मरते
तो हम इतने सारे
कैसे मिलते नदी के घाट पर!

एक दिन के लिए ही सही
पर मुर्दों की ही मार्फत
बची है हममें
थोड़ी सी सम्वेदना
और इंसान होने की तमीज़

धन्यवाद तुम्हारा
मुर्दों!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा

भाषा दु:ख को ज़िन्दा रखती है
क्योंकि दु:ख से ही अपनी शक्ति लेती है भाषा

दु:ख से लड़ना भाषा से भी लड़ना है
पर दु:ख से लड़ें ही क्यों
दु:ख तभी होता है
जब हम उसके लिए
द्वार होना बंद कर देते हैं

पर द्वार बनना भी
सरल कहाँ है इतना
उसके लिए
पहले अव्यक्तिक बनना पड़ता है
जो मैं हो नहीं पाता

कभी-कभी मुझे लगता है
मेरा दु:ख मेरी भाषा में नहीं है
तब भाषा ही मेरा दु:ख बन जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर स्त्री की कविता है

घर स्त्री की कविता है
पुरुष इस कविता का कागज़
आँगन हाशिया
बच्चे शब्द
प्रेम छंद
और सपने प्रेरणा

घर स्त्री की कविता है
जिसमें पृथ्वी सिमट जाती है
और आकाश अपना विस्तार भूल जाता है

जिसमें धूल है
आग है
भँवर है
पर जहाँ सूर्य
कुछ देर के लिए
अपनी छाया से मिलने का
सुख पाता है

घर स्त्री की कविता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सपने में साइकिल

बचपन में
मेरी जो साइकिल चोरी हो गई थी
बरसों बाद उसे सपने में देखा
अपने ही घर के आँगन में
वैसी ही दशा में
जैसे तब थी जब मैं उस पर सवार होकर
राजकुमार-सा अनुभव करता था

बरसों बा८
सपने में ही सही
मुझे मिली थी ऐसी कोई खुशी

सुबह सबसे कहा मैंने घर में
अपना यह सपना

बच्चों ने सुना तो हँस दिए
कहा पापा
कैसे जाएँगे हम तुम्हारी साइकिल पर अमेरिका

पत्नी मेरे सपने से हुई नाराज़
बोली
क्या इस उम्र में बैठ कर घूमूँगी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारी साइकिल के कैरियर पर
सच तुम्हें कभी सपने देखने नहीं आए!

तब से कोई भी सपना
सुनाने से डरता हूँ
मैं अपने ही घर में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दरारें

जब दीवारें
कद से ऊँची होने लगें
और अँधेरा
गहराने लगे भीतर
तब कितनी प्रिय हो जाती हैं दरारें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वही आवाज़

उन्होंने
पेड़ ज़रूर गिराया
पर जुदा नहीं कर पाए
उसका साया

पेड़ जब धड़ाम से गिरा
पृथ्वी काँपी
और एक आवाज़ गूंजी—
अरे इस पेड़ के नीचे
कोई ऋषि तपस्या कर रहा था!

वे आए पेड़ के पास
उसे देखा
पत्ता-पत्ता छुवा
पर उन्हें कोई ऋषि दिखाई नहीं दिया
लेकिन वही आवाज फिर फिर कानों में गूँजती है
जब कोई पेड़ यहाँ कटता है!

अब क्या करें
पेड़ और ऋषि का यह रिश्ता
उन्हें कैसे समझाएँ
जिनके हाथ में कुल्हाड़ियाँ हैं!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता और गणित

गणित से नापा
तो जीवन दरिद्र लगा

कविता से नापा
तो जीवन समृद्ध लगा

गणित
बार-बार दोहराता रहा
कितना जुड़ा

कविता ने
हर बार यही पूछा
कुछ घटा!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक पहाड़ी यात्रा से लौट कर

1

बड़े रास्तों पर बरसों चला
पर पहुँचा कहीं नहीं

तुम्हारी पगडंडियों पर
कुछ दिन क्या घूमा
ऊँचाई को नाप लिया।

2

जब दोस्त
बेहद बातूनी होने लगें
कितना सकून देता है
खिड़की से देखना बाहर
पहाड़ की तरफ

दरअसल
भाषा से घायल लोगों के लिए
ये पहाड़ ही एकमात्र विकल्प हैं।

3

यहाँ खिड़कियाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाँद से बातें करती हैं

दरवाज़ों से गले मिलती है हरियाली
और पेड़ गुनगुनाते रहते हैं रात भर

शुक्र है इस पहाड़ी गाँव में
देर से पहुँचता है अखबार।

4

पहाड़ ने देखी
मेरे बैग में कुछ किताबें
और हँस दिया
सारे जंगल को अपनी हँसी में शामिल करता हुआ

पहाड़ ने देखा
मेरे सारे नोट
और हँस दिया तनहा

पहाड़ ने देखी
मेरी आत्मा में सक्रिय चालाकी
और भूल गया हँसना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रंग

मुझे घृणा है
हर उस रंग से
जो धरती पर
धर्म का विज्ञापन लगता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बारिश के नाम चिठ्ठी

कुँवारी लड़की
दरवाज़े से देख रही है
बारिश को गिरते हुए

उसकी देह से उड़ रही है गंध बादलों तक
वह अपनी आँखों से लिखती है चिठ्ठी बारिश के नाम

बारिश थम जाने पर
वह धूप से माँगने लगती है
अपनी चिठ्ठी का जवाब

एक दिन बारिश ले गई
उसका कुँवारापन
और धूप ने प्रवेश किया
उसकी देह में बदलते मौसमों के साथ

अब एक चेहरा
रोज़ आता है उसके पास
और उसकी देह पर छोड़ जाता है अपनी परछाई

कभी कभी हवा की शरारत से
जब फडफडाता है कोई कोरा कागज़
उसे अपना कुँवारापन याद आता है
और वह उदास हो जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक पुराना माऊथ ऑरगन बजाते हुए

कभी कभी
मुझे मिलता है कितना सकून
बुटे का वह पुराना माऊथ ऑरगन बजाते हुए
जिसके लिए मैंने उसे बचपन में बहुत पीटा था
यह सोचकर कि लोफर लड़के
इसे बजाते हैं लड़कियों के लिए

मैं आज बजाता हूँ वही पुराना माऊथ ऑरगन
जब नहीं आता बेटे का फोन
जब दोस्त करते हैं दोस्ती कम
जब बहनें रूठ जाती हैं
जब कोई पुराना प्यार याद आता है
जब जेब में पैसे नहीं होते
जब अपने घर की ढलान छत याद आती है

तब तब
खुद से कहता हूँ मैं
लो एक लोफर पिता
आज अपनी जिन्दगी को लुभा रहा है किस तरह?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संग्रहालय

1

संग्रहालय से बाहर निकलते ही
मुझे यह सोचना अच्छा लगता है
जिन्होंने लड़े युद्ध
हत्याएँ की
उजाड़े घर
मर कर
उन्हें भी ज़रूरत पड़ती है
एक आवास की।

2

अभी-अभी इतिहास का पन्ना फाड़ कर
बाहर निकल आएँगे बर्बर
और किसी भी क्षण
शहर पर हो सकता है आक्रमण!

आएँगे
सदियों बाद जब पुरातत्त्ववेत्ता
तो उन्हें उत्खनन में
एक जली हुई रोटी मिलेगी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर क्या उस जली हुई रोटी के बारे में
इतिहास में कभी यह लिखा जाएगा
कि वह ऐसी आँच पर पक रही थी
जो किसी बर्बर से नहीं डरी

ताज्जुब है
दुनिया के किसी भी संग्रहालय में
वह जली हुई रोटी कहीं नहीं मिलेगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या
मैंने सपने में देखा
मैं जिस पुल पर खड़ा हूँ
वहाँ पुलिस का पहरा है
और मेरे अकस्मात डर जाने का यह कारण है
कि मेरी जेब में एक खत है उर्दू में लिखा हुआ

यह खत उस लड़की का है
जो मुझे बेपनाह चाहती है
और कभी-कभी मेरे हिन्दू होने से घबरा जाती है

उसके डर की छाया में
मुझे भी लगता है खतरनाक
उसके बारे में देखना तरह-तरह के ख्वाब

क्या पता
कब कौन कोई दयाशंकर कोई राहत अली
हमारे सामने खींच दे लकीर
और घोषणा कर दे
बस यहीं तक
आगे एक उबलती हुई नदी है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या
मैं जिस पुल पर खड़ा हूँ
उसके एक छोर पर दयाशंकर है
दूसरे पर राहत अली
और कैसे आश्चर्य की बात है
वे पुलिस को दिखाई नहीं देते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गोरखा

बड़ी देर रात तक
मैं सुनता रहा
गोरखे के लाठी की ठक-ठक

कब सोया कुछ पता नहीं

मेरी नींद में देखा
उस गोरखे ने एक सपना
सपने में उसके पास
अपने परिवार के साथ सोने के लिए
एक पूरी रात थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक अंग्रेज़ी फिल्म देख कर

पहले बजी सीटियाँ
और कुछ देर बजती ही रही

प्रतीक्षा में आतुर थे लोग
अभी बिल्कुल स्वच्छ था स्क्रीन
दर्पण की तरह
और नग्नता डिब्बे में बंद
जो बत्तियाँ बुझते ही फैल जाएगी
और पोंछ देगी
हर किसी के चेहरे से उसका धर्म

चुम्बनों से आरम्भ होगी नग्नता
फिर दिख जाएगी पूरी देह
वसंत से भरपूर पेड़ की तरह

हमारे जीवन की दरिद्रता पर
हँसेगा निर्देशक पूरी फिल्म में
और बजाता रहेगा अपने संगीतकार से
हमारे उपहास का संगीत

जब हम घर लौट आते हैं
कुछ जीवित साँकलें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तथा कलेंडर पर छपा ईश्वर
हमारी प्रतीक्षा कर रहे होते हैं

नींद से पहले
हमें फिर सुनाई देती है सीटियाँ
अभी भी हँस रहा होता है निर्देशक
बजा रहा होता है हमारे उपहास का संगीत

पर हम फिल्म भूल कर सिर्फ रोना चाहते हैं
क्योंकि दिन में धूल-सा बिछा हमारा जीवन
रात होते ही कीचड़ बनकर
हमारी आत्मा से लिपट जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रायश्चित

एक तरफ भाषा है
एक तरफ चुप्पी

भाषा से ही होकर
मैं पहुँचूँगा चुप्पी के पास

मेरी चुप्पी
मेरी भाषा का प्रायश्चित होगा!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पृथ्वी मेरा घर

घर से दूर नहीं
घर में ही सुरक्षित हो
मेरा एकांत

मुझे उस एकांत में
दिखे यह सारी पृथ्वी
अपने ही घर जैसी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कराकुल्ली

जब बाज़ार में
ऊँचे दामों बिक रही हों कराकुल्ली टोपियाँ
तो कितने दिन अपनी खाल के बारे में
रहा जा सकता है निश्चिन्त
क्या पता इस बाजार में
कब किसकी खाल पसंद की जाए!

यह जानते हुए कि हत्याएँ
इन टोपियों की नैतिकता हो गई है
मैं पूछता हूँ
ऐ खुदा!
जिन टोपियों ने माँ की खाल उधेड़ ली
बाप को कत्ल किया
गर्भ में सोए बच्चे तक को
खंजर से चीर दिया
वे टोपियाँ तुम्हें क्या इतनी अच्छी लगती है
कि तेज़ हवाओं में भी
इन्हें धूल में गिरने से बचा लेते हो।

सच बताना ऐ खुदा!
इन टोपियों से
क्या तुम्हें कभी कोई बू नहीं आती!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नियति

स्त्री वह हिरण है
जिसकी नाभि में छिपी कस्तूरी
पुरुष को बधिक बना देती है

स्त्री मरती है अपनी गंध से
पुरुष मरता है अपनी थकान से।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उम्र का कागज़

उम्र का कागज़
फटा खींचतान में

यूँ बीता मेरा जीवन
जैसे खुद से ही हो कोई अनबन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाड़े में एक प्रेम कविता

जब हम एक-दूसरे से
विदा ले रहे थे
आकाश पर बर्फ-बादल एकत्र हो रहे थे!

मैंने तुमसे कहा
इस मौसम में
सिर्फ प्यार किया जा सकता है
या फिर आत्महत्या

तुमने कहा
सिर्फ प्यार क्यों नहीं?
सुन कर ऐसा लगा
जाड़े के इस मौसम में
किसी ने मेरे सामने
अलाव जला दिया

बर्फ-बादलों से भरे
आकाश के नीचे
जब हम एक दूसरे से
विदा ले रहे थे
यूँ लगा
पहाड़ों की बर्फ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिन-रात ज़रूरत से ज्यादा
अपनी हैसियत में रहते हैं
इसीलिए अलाव जलाते नहीं
अलाव खरीदते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं तोते के बारे में सोचना नहीं चाहता

मैं तोते के बारे में बिल्कुल नहीं सोचना चाहता
पर हर समय उसे
अपने ही भीतर उपस्थित पाता हूँ

यह कमबख्त तोता चुगता रहता है
मेरी ही भाषा
मेरे ही विचार
मेरे ही साहसी भाव
और मेरी रीढ़ की हड्डी में जमा लोहा
ताकि न बोल सकूँ मैं
न रह सकूँ तनकर खड़ा
केवल दोहराता रहूँ
कुछ निरर्थक ध्वनियाँ

मैं जब कभी अपनी व्यथा में फड़फड़ाता हूँ
तो यह तोता मुझे
पालतू होने के फायदे समझाता है
और हर समय मुझसे कहता रहता है
इस दुनिया में कितना सुविधाजनक है
तोता बनकर जीवन बिताना

सोचता हूँ अभी तक मैं इतना जिया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतना बल अर्जित किया
पर क्या अभी तक इस तोते को
मैं अपने अंतस से कहीं दूर भगा सका!

आईना देखता हूँ
सामने यही तोता
मुझे दिखाई देता है
और तब-तब मैं खुद से सवाल करता हूँ
मैं जो सुनता हूँ
क्या वही नहीं दोहराता हूँ
आईने में प्रतिबिंबित मेरी अदृश्य आत्मा
अकस्मात बोल पड़ती है
हाँ तुम हो
सिर्फ तुम्हारी नाक तोते जैसी नहीं है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने देखी है

मैंने देखी है
तुम्हारी आँखों में
सुबह की वह ओस
जिसके सम्मुख
एक पूरा पेड़
झुक झुक जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम में से ही कोई

रोज़
हम में से ही कोई चला जाता है यूँ सहसा
जैसे कहीं छिप गया हो
जैसे फिर लौट आएगा
और नाराज़गी भरे स्वर में हमसे यह पूछेगा
इतनी जल्दी कोई किसी को
कैसे कर सकता है स्मृति से बाहर

रोज़
हम में से ही कोई चला जाता है
हमारे ही भीतर से होकर
पर हमें बिना छुए
कुछ भी कहे
बस हवा में अपनी अनुपस्थिति की लम्बी रेखा खींच कर

रोज़
हम में से ही कोई चला जाता है
जैसे कोई तस्वीर
कैनवस से उतर कर
लापता हो जाए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वीकारोक्तियाँ

1

इन दिनों अक्सर
मैं प्रार्थना करना भूल जाता हूँ
पर अपनी इस भूल पर
मुझे कोई दुःख नहीं होता!

कभी-कभी मुझे लगता है
प्रार्थना करने से अधिक सुखकर है
अपनी मनपसंद चाय पीना
और भूले हुए अपने प्रेम प्रसंगों को याद करना।

2

मैं
दुःख में बेतहाशा
हँसने लगता हूँ
और सुख में हो जाता हूँ
बहुत उदास

हे ईश्वर!
मेरा हँसना ही मेरी प्रार्थना है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3

मैं अपने सोचे हुए पापों के बीच
जी रहा हूँ

हे ईश्वर!
क्षमा करना मेरी कायरता
सचमुच मैंने ये पाप किए होते
तो अब तक मुक्त भी हुआ होता।

4

कुछ किताबें और औरतें
याद रहती हैं जीवन भर
हे ईश्वर!
मुझे पढ़ने को मिलती रहें अच्छी किताबें
और मेरे आस पास रहें ऐसी औरतें
जिन्हें चाहना प्रार्थना से कम नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम

हम थे
जैसे बीज के भीतर
धरती की चाह

हम हैं
जैसे पानी पर
तेल की कुछ छींट

फैलना ही
हमारा मिट जाना है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीलनाग का दुःस्वप्न

1

हवा में
फड़फड़ा रहे हैं
नीलमत पुराण के पन्ने

शताब्दियों के बाद
किताब से बाहर निकल आया है
नीलनाग
नंगे पांव
यहाँ इस शिला तक
कुछ आहत कुछ विचारमग्न
किसी ने
उसे अपने रुदन से जगाया है

पता नहीं
वह कौन था
नाग या मानव
पर इससे क्या अंतर पड़ता है
रोने वाले की वेदना का नहीं होता
धर्म
जात
देश।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2

उदास है नीलनाग
जब से वह जागा है
और सोच रहा है
पल-पल ठंडाती शिला पर

जिन शिखरों को
ईश्वर ने नाम दिए थे
वे ही अब कितने अपवित्र हो गए हैं

उज्ज्वल बर्फ पर
ये किनके पाँव के निशान
मन में उत्पन्न करते हैं भय

ये कैसे काँच के टुकड़े
बिखरे है फूलों के बीच
जो लहूलुहान करते हैं
तितलियों के पंख

ये कैसी-कैसी आवाज़ें गूँजती हैं
जो धड़कते हुए दिलों को सहमा देती हैं
फिर ऐसा सन्नाटा
पसर आता है चारों ओर
कि बोलना अपराध लगता है

उदास है नीलनाग
कोई समीप भी नहीं
कि जिसे वह सुनाए अपनी व्यथा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3

अकस्मात जल काँपा वितस्ता का
और एक हताश छाया
डूब गई उसमें
पर किसी ने नहीं देखा
जल भी नहीं जान पाया वह क्यों काँपा

जाग रही थी जल में
उस समय केवल एक मछली

टूटा कश्यप का ध्यान
समाधि छोड़ आया वह पहाड़ से
वितस्ता के पास
बोला क्यों चीखी थी मेरे ध्यान में

कुछ नहीं कहा वितस्ता ने
हवा में उभरा केवल एक संकेत
चिंतित हुआ कश्यप
सोचने लगा
ये सब कैसे हुआ?

रात
उसे आया सपना
देखा
किसी ने उसके कमंडल में
मरी हुई मछली रख दी थी

जागा ऋषि
देखा अदृश्य हो गई थी मछली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और कमंडल में जल नहीं लहू भरा था

वह हुआ विस्मित
फिर लगा सोचने
यह हमारे किस अंत का प्रतीक है?

4

उदास है नीलनाग
टटोलता है
अपनी ही लिखी पुस्तक के पन्ने
सोचता है
क्या सचमुच मर गया था जलोद्भव!

नीलनाग : सतीसर मिथक का नायक।
कश्यप : कश्यप ऋषि जिनके नाम पर कश्मीर का नाम पड़ा।
जलोद्भव : सतीसार मिथक का दैत्य।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डर ने हमें बनाया सभ्य

सदियों के डर ने
हमें बनाया सभ्य

सभ्य बन कर
हम हुए जागरूक

हुए जागरूक
तो सपने देखना
हम से छूट गया

सपने छूट गए
तो उन सपनों के लिए लड़ना
हम भूल गए

कैसा अचरज है
भूलते-भूलते हम भूल गए कि क्या भूला?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवितों का संग्रहालय

वे जीवित हैं
पर लग रहा है
साँस लेते हुए ही
उन्हें किसी संग्रहालय में रख दिया गया हो
वे जहाँ खुश हैं अपनी सुरक्षा से

वे भविष्य का इतिहास हैं

जब-जब अपने होने से ऊब जाते हैं
हँसने लगते हैं आँखों में आँसू भरकर

उन्हें अच्छी तरह देख लो
उनकी दाढ़ी है
मूँछ है
उनकी औरतों के स्तन हैं
वे बोलते हैं
सुनते हैं
खामोश भी रहते हैं
कभी-कभी संग्रहालय के संतरियों से
घुल-मिल भी जाते हैं

उनके बच्चे हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सपने हैं
उम्मीदें हैं
वे अपना अपना आकाश नापना चाहते हैं

इस संग्रहालय में
मैं जब अपना वजूद टटोलता हूँ
तो किसी बड़े काँच के भीतर
स्वयं को कैद पाता हूँ

फिर भी मैं खुश हूँ
क्योंकि संग्रहालय में पल रहे बच्चे
जब कोई काँच तोड़ते हैं
तो लगता है
हमारी वापसी पर हस्ताक्षर हो गए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वहाँ सब यह कहते हैं

वहाँ सब यह कहते हैं
अब पहाड़ तरसेंगे उजली बर्फ को
और झरने फूल हरियाली
स्मृतियों में ही दिखेंगे
स्वच्छ और निर्मल

वहाँ सब यह कहते हैं
धरती पर उगेंगे पेड़ अनगिनत
पर किसी को भी
उनसे छाया नहीं मिलेगी

वहाँ सब यह कहते हैं
रहिए एक-दूसरे से होशियार इन दिनों
कि रेत और हवा में हो गई है मित्रता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by MoE-IKS-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डर

मटमैले आलोक में
अपनी वर्णमाला के अक्षर टटोलता हुआ
अचानक रुक जाता है बच्चा
और कहने लगता है
अब्बू!
तुम अब डरो मत
वे जब आएँगे
मैं उन्हें आईना दिखाऊँगा

कहते हैं
वे आईना देखने से बहुत डरते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जलावतनी का गीत

मैं पहनता हूँ
अपने ही देश के जूते
और यह कल्पना करता हूँ
अपनी धरती पर चल रहा हूँ

मुझे अच्छा लगता है
भटकना कुछ देर
पूछना हर एक से अपना खोया पता
ढूँढ़ना उनकी आँखों में
बीते दिनों की छवियाँ!

नदी हवा चिनार
किस-किस का प्यार
मुझे अपनी ओर नहीं खींचता
मैं चलता ही जाता हूँ दूर दूर तक

सुनता हूँ.....
माटी की खुशबू के गीत
और उन गीतों में छिपी
अपनी मातृभूमि की व्यथा!

सुनता हूँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ढलान छतों से
बर्फ फिसलने की आवाज़ें!

मुझे अच्छा लगता है
चारों ओर फैली बर्फ पर
छोड़ते जाना अपने पाँव के निशान
और लौट आना घर बेहद थका

मैं पहनता हूँ
अपने ही देश के जूते
जो मुझे कहीं भी ले जा सकते हैं
सिर्फ वहाँ नहीं
जहाँ से हमें निकाला गया।

(मातृभूमि से निष्कासित भाइयों के लिए)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक बार गाँव लौट कर

सूँघते ही मेरे पाँव की गंध
गली मुझसे लिपट गई
और रोते-रोते साथ मेरे
घर तक चली आई

दरवाज़े ने देखा
तो हर्ष में अपनी साँकल हिलाई
खिड़कियाँ
मुझसे बात करने
अपनी दीवारों से बाहर निकल आईं

सीढ़ियाँ
मेरे हर कदम के नीचे
मेरा चुम्बन ले रही थीं

दीवारों ने कहा
हम कच्ची ज़रूर हैं
पर हमारे स्पर्श में
मिट्टी की खुशबू है

छत ने देखा तो रो पड़ा
मेरी आत्मा के छिद्रों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बर्फ और बारूद के बीच
सांसें लेता हुआ
मैं लौट आया था अपने घर
जहाँ अपने दादा के साथ बचपन में
मैंने तुलसी की चौपाइयाँ गाई थीं
जहाँ सन्ध्या होते ही
माँ दिया जलाती और कुछ बुदबुदाती

इतने बरसों बाद
फिर देखा मैंने वह दिया
पर कितना उदास और मलिन
याद करता हुआ वह दिन
जब पहली बार
उसकी लौ पर संदेह प्रकट किया गया

सोचता हूँ
मैं कैसे रहूँ फिर उस घर में
जहाँ मैं दिया जलाने से भी डरता हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम वहाँ हैं

हम वहाँ हैं
जहाँ दिल दरवाज़े खिड़कियाँ
अब चौंकती नहीं हैं!

जहाँ हम अपनी ही जगह खड़े
कभी-कभी अपने पर संदेह करने लगते हैं

जहाँ आईना देखने पर लगता है
जैसे कोई अरूप छाया जासूस बनकर
हमें खुद से ही डराती है

जहाँ आप चाहे दस्तक दरवाज़े पर दे या दिल पर
कहीं से भी
किसी साँकल के खुलने की आवाज़ नहीं आती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुत दिनों बाद

बहुत दिनों बाद
मैं गाँव गया

खुरची नाखूनों से वहाँ
आँगन की मिट्टी
देखा जो पहले नम हुआ करती थी
वही अब भीतर से कई पर्तों तक सूख गई है

बहुत देर मैं रोया
और मेरे आँसुओं से भीग गई सारी मिट्टी

मैं फेंक आया, वह सारी मिट्टी वहीं
पर शहर लौट कर भी यही लगता है
मेरे हाथों से अभी छूटी नहीं वह मिट्टी
उसमें जैसे किसी फूल के खिलने की चाह जगी हो!

उस समय मुझे यह लगता है
जैसे मेरे हाथ
दुनिया के सबसे खूबसूरत हाथ हैं
जो अपनी हथेली पर अनुभव कर रहे हैं
किसी फूल का खिलना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शांति प्रक्रिया

उन्होंने हत्याएँ कीं
पर हत्यारे नहीं कहलाए
कभी-कभी इतिहास
हत्यारों का कितना मान बढ़ा देती है!

वे जिनसे जंगल की हरियाली
और नदी का जल काँप उठते हैं
वे ही आज अपने सफेद कबूतरों के साथ
पहाड़ से उतर आए हैं
उन्होंने पहना रखे हैं
अपने इन कबूतरों के गले में
हरे रंग के ताबीज!

ताबीजों में एक-एक सपना है उनका
खुदा द्वारा हस्ताक्षरित

कभी वे ले आते हैं सफेद कबूतरों को
अपनी हथेली पर
और कभी उन्हें बंदूकों के पीछे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छिपा लेते हैं!

मैं जब भी देखता हूँ इन सफेद कबूतरों को
तो डर जाता हूँ
कैसे न डरूँ
वे दूर दिखें या पास
लहू के छींटे
मेरे ही लिबास पर गिरा देते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वितस्ता बहती है आज भी

वितस्ता बहती है आज भी
पर उदास है देखकर उन पुलों को
जो न अब किनारों से जुड़े हैं न दिलों से
जो इतने कमज़ोर हैं
कि गिद्ध तो गिद्ध
किसी बुलबुल के साए से भी काँपने लगते हैं

वितस्ता बहती है आज भी
पर उदास है देखकर उन घरों को
जिनमें न कोई रोशनी ही जलती है, न प्रार्थना ही होती है
जिनमें सिर्फ रात को कभी-कभी
कुछ खुली हुई किताबों के पन्ने फड़फड़ाते हैं
और सन्नाटा सन्नाटे से टकराने लगता है

वितस्ता बहती है आज भी
पर उदास है देखकर अपने पानी का रंग।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सेब के बारे में एक कविता

हत्याओं के मौसम में
जब चारों ओर उछल रही थी
रक्त की छीटें
सेब पेड़ पर
अपने स्वाद का सपना देख रहा था

सपने में ही उसे अच्छा लगा अपना रंग
जब बाहर आया सेब सपने से
उसे लगा वह अपने मौसम में नहीं है

यहीं से आरम्भ हुआ सेब का संदेह
खुद पर
पेड़ पर
धरती बीज हवा पर।

अपने रंग और स्वाद से युक्त होकर भी
सेब आज उदास है
और सोच रहा है
यह कैसी आबोहवा पल रही है
मेरे वतन में
कि मुझे अपना ही स्वाद कड़वा लग रहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिरन

1

आजकल जो हमारे यहाँ
गिरती है बारिश
वह हमारे पुरखों के आँसू हैं

बादलों में छिपकर
रोते हैं मेरे पुरखे
जब देखते हैं–
वही पोशाक, जो कभी सूफी पहनते थे
आज अपने भीतर
हथियार छिपाते हैं
और अपने दामन में
लहू के दाग लेकर
खुदा को याद करते हैं।

2

बच्चे कहते हैं
पुरखों की इस पोशाक को
किसी संग्रहालय में होना चाहिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस समय मुझे यह लगता है
जैसे मेरी ही त्वचा
टाँग दी गई हो किसी कील पर

बच्चे कहते हैं
उन्हें पुरखों की इस पोशाक से
अतीत की बू आती है
जो उनके सपनों में
अंधेरे की तरह फैल जाता है

उस समय मुझे यह लगता है
जैसे ये बच्चे
मनीप्लांट के ऐसे पौधे हैं
जो अपनी जड़ें
बोतल में डालकर भी
संतुष्ट हो सकते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बंदूक की नोक पर बैठी चिड़िया

कुछ देर के लिए
बंदूक की नोक पर बैठी चिड़िया
और ऊनींदे सिपाही की आँखों में
डाल गई एक तिनका ओस भीगा

चिड़िया ने क्या देखा बंदूक से
कोई नहीं जानता
पर सिपाही को अब बंदूक से
केवल चिड़िया ही दिखाई देती है
जिसे वह अपने भीतर
चहचहाते हुए अनुभव करने लगता है

सोचता है सिपाही
कहीं उसकी मृत बेटी
चिड़िया बनकर तो नहीं आई थी!

अब हर बार
जब सिपाही ट्रिगर पर ऊँगली दबाता है
उसे अपनी बेटी की चीख सुनाई देती है
और वह काँप जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by MoE-IKS-MHRD-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसा क्यों होता है

जंगल मित्र था मेरे गाँव का
नदी थी प्रेमिका
बर्फ बहन
और माँ चिनार की छाया

वे जब आए तो सबसे पहले
मित्रता में झूमते पेड़ों को काट डाला
फिर किया लहूलुहान मेरी प्रेमिका को
यह देख सहम गई मेरी बर्फ-बहन
और डर के कारण
चिनार से उतर गई उसकी छाया

क्रूरता हवा में थी
और रोशनी गवाह बनने से
इंकार कर रही थी

अंधेरे में सोई पड़ी थी
मेरे इतिहास की किताब
कुछ थे जो उस अंधेरे में
इतिहास की सियाही बदलने की
कोशिश कर रहे थे!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नींद और जागरण के बीच
डोलता हुआ
मैं अपने भीतर इतिहास की बू लिए
अक्सर यह सोचता हूँ
ऐसा क्यों होता है
जब आदमी डरने लगता है
अपनी ही पगड़ी से
या अपनी ही दाढ़ी-मूँछ से
जैसे इस समय
मैं डर रहा हूँ अपने नाम से।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम वे लोग है

हम वे लोग हैं
जिन पर नहीं रहा
अपने ही दरख्तों का साया

हमने तापी
धूप के आदेशों पर
यहाँ-वहाँ
अपनी ही परछाइयाँ।

हम वे लोग हैं
जिन्हें रात
एक ऐसे ताबूत में सुला देती है
जहाँ हमारी साँसें
स्मृतियाँ
सपने
चुप्पी का फटा हुआ कफन
ओढ़ लेती है
और एक बेजान-सी ठण्डी तनहाई
रातभर हम से लिपट जाती है!

इस ताबूत में
हमारे लिए बस इतनी-सी है सान्त्वना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि हम करवट बदल सकते हैं
और सूँघ सकते हैं
उन फूलों को
जो हमारे आसपास महक रहे होते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संग्रामपुरा* हत्याकाण्ड

कल जो मेरे हमशक्लों की
हत्या की गई
उन सबकी मौत के साथ
रातभर जागा हूँ मैं
और सुबह उन्हीं हमशक्लों की मौत पर
बेतहासा हँसा भी हूँ
क्योंकि हत्याओं के बाद हत्यारे
चेहरे और कपड़े बदलकर
रोने वालों में शामिल हो गए हैं!

अब और क्या कहें
हत्यारों ने
मौत पर रोना भी
झूठा बना दिया।

* कश्मीर एक गाँव, जहाँ अल्पसंख्यकों का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यही तो दिक्कत है

एक लम्हा कि घर था यहाँ
एक लम्हा कि घर कहीं नहीं
इन्हीं दो लम्हों के बीच
फैला है हमारा सारा इतिहास।

जब घर था
तो इतिहास से ओझल थी आँख
जब घर नहीं है
मैं ढूँढ़ रहा हूँ
इतिहास में अपना घर

यही तो दिक्कत है
इतिहास से बाहर आकर
सोचा ही नहीं
मैंने अपने भूगोल के बारे में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विस्थापित शिविर में एक गूँगी लड़की

1

घाटी के पिशाच से
डर कर भाग आई
हज़ारों के साथ एक गूँगी लड़की

उसके अंकुराते सीने में
अथाह दर्द था
जिन्हें वह आँसुओं में बह जाने देती थी

भागने से पहले तक
एक नदी थी गूँगी लड़की की
दुश्मन सरहदों के बीच से बहते हुए भी
जो उसे नीले समंदर की लहरों के साथ जोड़ देती थी

पहाड़ थे गूँगी लड़की के
जिन पर वह देवताओं का प्रणय देखा करती थी
गूँगी लड़की के मनपसंद पेड़ थे फूल थे आस्था की पुकार सुनते हुए
रंग और बू थी अपनापे की
लय बुनती हवा थी

गूँगी लड़की की एक नहीं अनेक सहेलियाँ थीं
साजिदा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ताहिरा
मुद्दसर
गुलबदन
कितनों के नाम लें हम!

अपनी इन मनपसंद सहेलियों के साथ
भागने से पहले तक हँस रही थी
गूँगी लड़की।

2

घाटी के पिशाच से
डर कर भाग आई
हज़ारों के साथ
एक गूँगी लड़की

माता-पिता
भाई-बहन
एक ही तम्बू के भीतर
धीरे-धीरे सिकोड़ने लगे अपना कद

गूँगी लड़की की भाषाहीन व्यथा को
हर रात सुनने लगा पूरा तारामंडल

विस्थापन की नंगी धूप में
एक पिता अकेला खड़ा
अपने भीतर से निकालने की कोशिश करने लगा
अपने बच्चों के लिए एक छतनार चिनार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वात्सल्य के प्रकाश में
गूँगी लड़की
अपने पिता की झुर्रियों में
देखने लगती है
आने वाले दिनों के खतरनाक संकेत

निचोड़े गए नींबू जैसे पिता की आँखों में
झाँक कर
उसे प्यास का समंदर दिखाई देता है

धूप से आहत
तारकोल पुती सड़कों पर
अपने पिता के साथ चलते हुए
गूँगी लड़की
अपने भीतर की बर्फ-शक्लें
बचाने की कोशिश कर रही है
यही बर्फ-शक्लें
उसकी उम्मीद का आधार है

रात के पिघलते लम्हों में
गूँगी लड़की
खोल देती है अपना वक्ष
उस एक तारे के लिए
जो उसकी धरती पर कभी नहीं आएगा

जानती है वह
एक दिन उसके प्रेम का यह आधार भी
खिसक जाएगा
और अकेलेपन का झरना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसे सुनाता रहेगा
चट्टानों पर गिरते पानी का नाद

एक दिन नहीं रहेंगे पिता
रोज़गार के पहिये से बँधा भाई
पता नहीं कहाँ-कहाँ भटकेगा
प्रतीक्षा से ऊबकर बहन भी चली जाएगी
और अपनी नियति के साथ अकेले रह जाएगी
गूंगी लड़की
यह सोचते हुए कि एक अनाम नदी की तरह वह कहीं गुम न हो जाए?

इसी डर की आबोहवा में साँसें लेती हुई
एक दिन वह आग में तपाए चाकू से
छील देती है अपनी गोरी बाँह पर
छूट गए अपने वतन का नाम
अपनी पहचान के लिए

विस्थापन से पहले
सेबों की टहनी थी गूँगी लड़की।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतिहास का निर्णय

चिनार!
कल रात मेरे सपने में
आ गिरा तुम्हारा एक सुर्ख पत्ता
और कुछ देर के लिए मुझे लगा
मैं अपनी आबोहवा में लौट आया हूँ

मैं जानता हूँ चिनार!
जबकि तुम्हारी छाँह पर
नहीं किसी का भी एकाधिकार
फिर क्यों तुम्हारी छाँह में पलने वाला मैं
आज नंगा सिर लिए घूम रहा हूँ?

तुम जहाँ हो
वहाँ आज मैं क्यों नहीं हूँ
और जहाँ हूँ
वहाँ क्या मैं होना चाहता था?

इतने वर्ष बीत गए चिनार,
क्या तुम ने कभी उन्हें टोका
जो तुम्हारी छाँह के अकेले वारिस बनकर
इतिहास के लाडले पुत्रों की तरह
जीना चाहते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कभी उन्हें कहा
जाओ, उन्हें वापस लाओ!

चिनार!
तुम नहीं हो मुगलों की ऐयाशी के प्रतीक
तुम हो मेरी संस्कृति के मूलाधार
मेरे इतिहास वृक्ष!

नहीं जानता मैं
वह इतिहास था या कविता
जिसे हम पहले भूले
(शायद दोनों ही साथ-साथ भूले)
जितना भूलते गए
उतना डरते भी गए
और यहाँ-वहाँ-जहाँ मिली सुरक्षा
वहां के हो गए
यह जाने बिना कि
इतिहास उन्हें बिखराकर मिटा देता है
जिन्हें सिर्फ सुरक्षा की चाह होती है

जिनके पास न कोई संकल्प है
न कोई संघर्ष भाषा
इतिहास हँसता है उन पर
और कभी क्षमा नहीं करता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वितस्ता का तीसरा किनारा

उन्होंने रेत पर बनाए घर
और पीछे छूट गई नदी की याद में
बनाई कागज़ की कश्तियाँ!

वे कहते हैं
इतिहास साक्षी है
हमने पा लिया
जीने का हुनर
आखिर
हमने ढूँढ़ ही लिया
वितस्ता का तीसरा किनारा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेकिन संतोषी की कविताएँ उस पुराने घर और संसार के सौंदर्य को भी उसी हुलास से अंकित करती हैं। इन कविताओं में कश्मीर का सौंदर्य बिल्कुल अछूते बिम्बों और स्वर-लहरियों के माध्यम से व्यक्त हुआ है। यहाँ 'हवा में बर्फ की दस्तकें', 'ढलान छतों से बर्फ पिघलने की आवाजें हैं' और चिनार की गम्भीर छायाएँ। एक छूटे हुए घर की याद समूची पृथ्वी को घर बना लेने की लालसा में बदल जाती है—'यह सारी पृथ्वी अपने ही घर जैसी'। और इस संश्लिष्ट अनुभव-लोक को अद्‌भुत संकेन्द्रण के साथ व्यक्त करती है। यह छोटी-सी कविता—

मैं क्या था / जल की पतली धार के सिवा /
पर एक मछली की प्यास ने / मुझे दरिया बना दिया। / वही मछली अब मुझे रोकना चाहती है / पर मेरी अपनी प्यास / मुझे बहा ले जा रही है / समंदर की ओर

महाराज कृष्ण संतोषी का यह संग्रह समकालीन हिन्दी कविता में एक सर्वथा नये, पृथक् स्वर की खोज तथा अपने जीवट और ऐंद्रिकता के लिए रेखांकित किया जाएगा। वितस्ता के दोनों किनारों को खो चुका मनुष्य जहाँ भी जाएगा, आखिर ढूँढ़ ही लेगा 'वितस्ता का तीसरा किनारा'। क्या कविता भी वही तीसरा किनारा नहीं है? और संतोषी की कविता भी?

अरुण कमल

आवरण चित्र : भूषण कौल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महाराज कृष्ण संतोषी

जन्म : सन् 15.06.1954 (कश्मीर) में।

शिक्षा : पंजाब विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में एम.ए.।

विधिवत काव्यलेखन सन् 1975 के आस-पास शुरू किया।

पहला कविता संग्रह 'इस बार शायद' 1980 में प्रकाशित।

'पहल', 'साक्षात्कार', समकालीन भारतीय साहित्य, वर्तमान साहित्य, हंस, कथादेश, जनसत्ता सहित देश की लगभग सभी महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ तथा कहानियाँ प्रकाशित।

कुछ रचनाओं के अनुवाद अंग्रेज़ी, पंजाबी, बंगाली तथा कश्मीरी में।

प्रमुख कश्मीरी कवियों की प्रतिनिधि कविताओं के हिन्दी में अनुवाद।

प्रकाशित कृतियाँ

काव्य : 1. इस बार शायद (1980), 2. बर्फ़ पर नंगे पांव (1993, पुरस्कृत), 3. यह समय कविता का नहीं (1996)

कहानियाँ : 'हमारे ईश्वर को तैरना नहीं आता' (प्रकाशनाधीन)।

विगत 15 वर्षों से जम्मू में शरणार्थी जीवन जीने को बाध्य। सम्प्रति : सरकारी नौकरी

सम्पर्क : 113-ए/4, आनंद नगर, बोड़ी पट्टा,
तालाब - तिल्लो, जम्मू-तवी (180002)।